

टाटला नी टाट जाय
पण टेव नी जाए

वागधारा

नवम्बर, 2021

वागधारा नी



विरासत स्वराज यात्रा, बढ़ते कदम - नव निर्माण की ओर.....



जनजाति क्षेत्र के प्यारे किसान, भाइयों, बहनों, प्यारे बच्चों संगठन के साथियों तथा स्वयं सेवकों आप सभी को दीपावली की, नववर्ष, गोवर्धन पूजा और देव दिवाली की बहुत सारी शुभकामनाएं !

यह वर्ष आपके लिए खुशियां और आनंद उल्लास भरा रहे । आपके खेत खलिहान अनाज से भरे हुए रहे, कबले धन-धान्य से भरे हुए रहे, हम सब स्वस्थ रहें, हमारे गोवंश, हमारे मवेशी स्वस्थ एवं आबाद रहे ,हमारे प्राकृतिक संसाधन आबाद रहें सुरक्षित रहें व प्रकृति हमेशा हमें साथ देती रहे । इस हेतु मेरी ओर से और वागधारा परिवार की ओर से आप सभी को बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनाएं !

हमारे लिए दीपावली प्रकृति से जुड़ने का एक बहुत बड़ा त्यौहार है चूँकि आने वाला समय सर्दी की खेती का समय है और हम सब सर्दी की खेती में व्यस्त होंगे । मैं आपसे आग्रह करना चाहूंगा कि हम प्रयास करें कि हम किस प्रकार से हमारे सच्ची खेती के घटकों को ध्यान में रखकर के हमारी कृषि को आबाद कर के रख सकते हैं । और इसके बाद विशेष रूप से लोग दीपावली के बाद शहरों में कमाने चले जाते हैं और खेतों को छोड़ देते हैं मैं अनुरोध करना चाहूंगा कि दीपावली के बाद अपने बच्चे हुए नरंगा के दिनों को पूरा करें । परिवार के साथ यहाँ रहे, बच्चों की शिक्षा और उनके विकास पर ध्यान दें और अपनी खेती को परिवार आधारित सुरक्षित बनाने का प्रयास करें ।

हम परिवार छोड़ कर चले जाते हैं उससे हमारे यहां का विकास रुकता है क्षेत्र का विकास रुकता है तो अगर हमें जाना पड़े तो हम जाये परंतु कुछ समय के लिए जाये घर के कार्यों को बिगाड़ करके खेती के कार्यों को दुसरो के भरोसे छोड़कर कर के जाना हमारे लिए नुकसानदायक हो सकता है । इस बात का हमेशा ध्यान रखे । मैं दीपावली के इस अवसर पर पुनः आप सबको शुभकामनाएं देता हूँ,हमारे सरपंचों, जनप्रतिनिधियों को भी हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाएं । वागधारा परिवार की ओर से समस्त कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं !!

धन्यवाद

आपका
जयेश जोशी

भारत को जीवन बनाने वाली विरासत जल, जंगल, जमीन, जानवर, बचाने की जरूरत है, क्योंकि हमारे स्वार्थवश विकास ने हमारी विरासत को नष्ट करने का काम किया है । हमारी प्राकृतिक विरासत, मानवीय विरासत को नष्ट करने, बिगाड़ने, विकृत करने का काम कर रही है । इसलिए हमारी प्राकृतिक विरासत, मानवीय विरासत पर अतिक्रमण, प्रदुषण और शोषण की मार आ गई । इन्हें बचाने हेतु, स्वराज विरासत यात्रा के कदम - नवनिर्माण हेतु सराहनीय प्रयास है । क्योंकि स्वराज विरासत यात्रा ने हमारी मानवीय चेतना जागरूक करने का कार्य किया है । हमारी खेती, हमारी विरासत जल, जंगल, जमीन आदि जो हमारी विरासत है, इनके ऊपर जो वैश्विक बाजारीकरण का संकट आया है, उसके लिए यह यात्रा भारतीय ज्ञानत्रं को समझाना, सीखना व अपनी विरासत को सहजना और विरासत बिगाड़ने वालों के खिलाफ संघर्ष में प्रेरणादायी हो रही है । आज दुनिया में विरासत का संकट है, इस विरासत से संकट से मुक्ति के लिए दुनियाभर के लोग अपने गाँव, अपने राज्य, अपने देश की विरासत बचाने का प्रयास कर रहे हैं । हमारा जीवन, हमारी जीविका, हमारा जमीर बचेगा तो, जो हमारी विरासत सुरक्षित रहेगी, आज हमारे वागड़ समाज में अपने ज्ञानत्रं बचाने हेतु और मानवता प्रकृति के प्रति प्रेम करने वाली विरासत को जोड़ने वाली इस यात्रा से हम मानवता और प्रकृति का बराबर सम्मान करने के साथ विरासत को जो महानता है, उसे समाज को रूबरू कराकर आगे बढ़ाएंगे । आज बापू की विरासत पर भी संकट है। बापू की सादगी, सरलता, उनका अध्यात्मिक दर्शन, वसुधैव कुटुम्बकम्, जय -जगत का रास्ता दिखाने वाले जो प्रेरक स्थान रहे हैं, उनके इस रास्ते को स्वार्थवश विकास दबाच रहा है । आज बापू की विरासत को संरक्षित रखने और मार्ग पर चलने वाले लोग अभी चिंतित है कि, बापू की विरासत को कैसे बचाया जाये ? बापू भारतीय ज्ञानत्रं से हमें विस्थापन, विनाश मुक्त होकर चलना और जीना सिखाते थे। बापू ने भारतीय ज्ञान के बलवृत्ते ही स्वावलंबन के अड्डार रचनात्मक कामों से मेनचेस्टर कम्पनी की लूट रोकने हेतु चरखे को अपना हथियार बनाया था। बापू प्रकृति और मानवता का बराबर सम्मान करते थे। उन्होंने समय, अतिरिक्त और वस्तुमान का ज्ञान भारतीय ज्ञानत्रं के द्वारा देखा और समझा था। इसलिए वे जीवनभर मानव की जरूरत पूरी करने वाली प्रकृति के साथ निःस्वार्थ का ही पाठ पढ़ाते रहे। यही प्रेरक ज्ञान भारतीय ज्ञानत्रं भारत की मूल विरासत है। भारतीय ज्ञानत्रं की विरासत को वैश्विकरण और बाजारीकरण की लालच ने लूट लिया है। आज का बाजार ही सबसे बड़ा लूट्टा है। इसमें ज्ञान व्यवहार में सदाचार नहीं बचता। यह सभी तरफ से ज्ञान और विरासत को मिटा रहा है भारत की बड़ी विरासत भारत की किसानों, जवानों और पानी भी है। आज इन तीनों पर भी संकट है। हमारी खेती विरासत को जहरीले रासायनिक पदार्थ और आधुनिक मशीनीकरण ने नष्ट कर दिया है। इससे युवाओं के खेती में रोजगार नष्ट हो रहे हैं, इससे हमारे देश की लाचारी, बेकारी, बीमारी और बेरोजगारी बढ़ रही है। अभी वक्त है कि, हम भारतीय ज्ञानत्रं को समझने, सहजने और समझाने का प्रयास करें इस स्वराज विरासत यात्रा के माध्यम से ।

‘स्वराज’ की अवधारणा अत्यन्त व्यापक है । स्वराज का अर्थ केवल राजनीतिक स्तर पर विदेशी शासन से स्वाधीनता प्राप्त करना नहीं है, बल्कि इसमें सांस्कृतिक व नैतिक स्वाधीनता का विचार भी निहित है । यह राष्ट्र निर्माण में परस्पर सहयोग व मेल-मिलाप पर बल देता है । शासन के स्तर पर यह ‘सच्चे लोकतंत्र का पर्याय’ है । गांधी का स्वराज आत्म-संयम, ग्राम-राज्य व सत्ता के विकेन्द्रिकरण पर बल देता है । गांधी परम्परागत अर्थ में तो राजनीतिक चिन्तक थे और न ही सिद्धांत निर्माता थे, किन्तु वह भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के अग्रदूत तथा श्रेष्ठ समाज सुधारक थे। एक ओर सत्य और अहिंसा के आधार पर उन्होंने असहयोग, सविनय अवज्ञा तथा भारत छोड़ो आन्दोलन का नेतृत्व किया, दूसरी ओर जातिवाद, साम्प्रदायिकता तथा छुआ-छूत के विरुद्ध अभियान चलाया । गांधीजी का पूर्ण विश्वास सत्याग्रह में था । वे सत्याग्रह में जिस साहस को आवश्यक मानते थे, वह उन्हें शहरी लोगों में नहीं, बल्कि किसानों के जीवन में मूर्तिमान रूप में दिखाई पड़ता था ।

ग्राम स्वराज में आर्थिक स्थिति ही आदर्श नहीं, अपितु सामाजिक स्थिति भी आदर्श थी, इसीलिए वे सभी सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन पर जोर देते थे । गांधी जी के ग्राम स्वराज का जो सपना आज हमें अधूरा लग रहा है, वह पूरा किया जा सकता

है । गांधीजी ने ग्राम स्वराज की दिशा में जो तर्क दिए थे, उन पर अमल करने के पश्चात ही हम ग्राम स्वराज की कल्पना को साकार कर सकते हैं । गाँवों का आत्मनिर्भर होना, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक होना ग्राम स्वराज की पहली शर्त है । इस दिशा में हमें आगे बढ़ना होगा क्योंकि केवल सत्ता हस्तान्तरण से ग्राम स्वराज की कल्पना पूर्ण नहीं हो सकती है । गांधी के विचार और कर्म केवल हमारे हिन्दुस्तान तक नहीं हैं बल्कि वे पूरे संसार के लिए सामायिक बने हुए हैं । अहिंसा के बल पर दुनिया जीत लेने का जो मंत्र गांधी ने दिया था, आज जिसे पूरा संसार समझ रहा है यह विस्मयकारी है कि गांधी ने एक विषय पर, एक समस्या पर चर्चा नहीं की है बल्कि वे समग्रता की चर्चा करते रहे हैं । वर्तमान समय में हम जिन परेशानियों से जूझ रहे हैं और साधन - शुचिता का मार्ग तलाश कर रहे हैं, वह मार्ग हमें गांधी के रास्ते पर चलकर ही प्राप्त हो सकता है । विरासत स्वराज यात्रा का उद्देश्य यह भी है कि प्रत्येक गाँव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के मामले में स्वावलंबी हो तभी वहाँ सच्चा ग्राम-स्वराज्य कायम हो सकता है । इसके लिए उन्होंने इस बात पर बल दिया कि जमीन पर अधिकार जमींदारों का नहीं होगा, बल्कि जो उसे जोतेगा वही उसका मालिक होगा। इसके अतिरिक्त, उन्होंने ग्रामोद्योग की उन्नति के लिए कुटीर उद्योगों को बढ़ाने पर बल दिया जिसमें उनके द्वारा खादी का प्रचार शामिल था । गांधी का मानना था कि चरखे के जरिये ग्रामवासी अपने खाली समय का सदुपयोग कर वस्त्र के मामले में स्वावलंबी हो सकते हैं । ग्रामोद्योगों की प्राप्ति के लिए ही उन्होंने मशीनों के बजाय हाथ-पैर के श्रम पर आधारित उद्योगों को बढ़ाने पर जोर दिया संकल्प लिया । गांधीजी द्वारा ग्रामों के विकास व ग्राम स्वराज्य की स्थापना के लिये प्रस्तुत कार्यक्रमों में प्रमुख थे - चरखा व करघा, ग्रामीण व कुटीर उद्योग, सहकारी खेती, ग्राम पंचायत व सहकारी संस्थाएँ, राजनीति व आर्थिक सत्ता का विकेन्द्रिकरण, अस्पृश्यता-निवारण, मद्य-निषेध, बुनियादी-शिक्षा-आदि ।

इस विरासत स्वराज यात्रा के दौरान स्वराज के निम्नलिखित घटकों पर चर्चा की गई जल स्वराज, मिट्टी स्वराज, बीज स्वराज, वन स्वराज, खाद्य एवं पोषण स्वराज और वैचारिक स्वराज । विरासत स्वराज यात्रा जनजातीय समाज में जल स्वराज , मिट्टी स्वराज, बीज स्वराज, वन स्वराज खाद्य व पोषण स्वराज और वैचारिक स्वराज को स्थापित करना है । जिससे ग्राम स्वराज के रास्ते हिन्द स्वराज का सपना साकार होते देखा जायेगा यही विरासत स्वराज यात्रा का उद्देश्य है । स्वराज को लेकर स्थानीय स्तर पर की जा रही व्यक्तिगत एवं सामुदायिक पहल के द्वारा हम मध्य भारत के जनजातीय समाज के बीच एक ऐसा आधार निर्मित करेंगे जिससे सम्मिलित विकास के माध्यम से गाँधी के स्वराज को मूल्यों के साथ अपना सके और आने वाली पीढ़ियों को स्वराज विरासत प्रदान कर सके । हर जनजातीय सदस्य की भागीदारी, वृहत समुदाय द्वारा विभिन्न मुद्दों पर स्वराज स्वयं-सेवकों के माध्यम से प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त हो सके । इस दिन की अनुशंसा मांग-पत्र और मुद्दे जनजातीय संप्रभुता पर काम कर-रही संस्थाओं और विभागों को अपनी रणनीति और कार्यक्रम तैयार करने में मददगार साबित होंगे । हमारी भागीदारी और जिम्मेदारी हेतु सत्यमेव जयते को सार्थक करने में है । यह स्वराज यात्रा जनजातीय अंचल में युवा और किशोरों में विरासत आस्था पैदा करेगी । अपनी आवश्यकता बढ़ाने की इसी कार्य के साथ वागधारा संस्था सम्पूर्ण स्वराज कि ओर बढ़ रही है और जनजातीय समाज की संप्रभुता और आजीविका के लिए समर्पित इस विरासत स्वराज यात्रा का शुभारम्भ 2 अक्टूबर गांधीजी की जयंती के दिन वागधारा परिसर, कूपड़ा से डूरपुर जिले के साबला, आसपुर से बांसवाडा जिले के घाटोल ब्लॉक से होते हुए पीपलखुंट, मध्यप्रदेश में बाजना, कुशलगढ़, थानदला, सज्जनगढ़, गांगड़लताई, गुजरात में झालोद फतेपुर से आनंदपुरी के गमाना गाँव में गुरु गोविंद सिंह बारादरी भवन में इसका आयोजन किया और स्वराज यात्रा का समापन दिनांक 20/10/2021 को मानगढ धाम में हुआ ।

विकास मेधाम
वागधारा



“आज दिवाली काल दिवाली राती गाय नो मेरियु”

पर्व और त्यौहार हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं । इनसे जुड़ी परम्पराएँ पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कारों को हस्तांतरित करने में सहायक होती हैं । हमारे देश में कहते हैं सात दिन में आठ त्यौहार होते हैं, ये इसी बात को दर्शाते हैं कि हमारे सामाजिक जीवन में त्यौहार कितने रचे बसे हैं । प्रत्येक त्यौहार के साथ ऐसी ऐसी परम्पराएँ निभाई जाती हैं जो हमारे सामाजिक और आर्थिक ताने बाने को मजबूती प्रदान करके सामाजिक समरसता का निर्माण करते हैं । हमारी यही सामाजिक समरसता हमारे समाज की जीवन्तता को बनाये रखती है । हमारे यहाँ सभी पर्व और त्यौहार को एक या दो दिन तक मनाने की परम्परा है, लेकिन इन सबसे ज्योतिषर्ष दीपावली का त्यौहार पांच दिन तक मनाया जाता है । धनतेरस से आरम्भ होकर, रूप चौदस, दीपावली, गोवर्धन पूजा और भाई दूज को समाप्त होता है । प्रत्येक दिन का हमारी संस्कृति में हमारे जनजीवन में विशेष महत्व है ।

धनतेरस : वैसे तो धनतेरस का पर्व आयुर्वेद और स्वास्थ्य के देवता भगवान् धनवन्तरी के प्राकट्य दिवस के रूप में मनाया जाता है । माना जाता है कि पहला सुख निरोगी काया । अच्छा स्वास्थ्य जीवन का सबसे बड़ा धन है । किन्तु हमारे लोक जीवन और लोक संस्कृति में धरती को भी धन माना गया है । धरती से ही हम सभी प्रकार के पदार्थ प्राप्त करते हैं । कृषि प्रधान सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में हम धरती को माता के रूप में पूजते हैं । धनतेरस के दिन महिलाएँ गाती बजाती अपने साथ छोटी तगारी, कुम-कुम, चावल आदि लेकर गाँव के बाहर मिट्टी लेने जाती हैं । वो उस स्थान पर जाकर जिसे स्थानीय बोल चाल में खाईया कहते हैं जाती हैं । मिट्टी खोदकर पांच छोटी छोटी ढेरियाँ (ढगलियाँ) बनाती हैं । कुम- कुम चावल से उसकी पूजा करती हैं और धरती माता से आज लेकर मिट्टी खोदकर अपने घर लाती हैं । उस मिट्टी से अपने घर में लिपाई करती हैं । उस मिट्टी को घर लाकर वो ये मानती है कि दुनिया का सबसे बड़ा धन लाकर वो धनतेरस का पर्व मना रही है । यदि धरती माता की कृपा रही तो दुनिया के सभी धन उसकी झोली में होंगे । ये भाव दर्शाता है की प्रकृति किस प्रकार हमारे जीवन का अविभाज्य अंग बन गयी है । समय के साथ साथ इस पर्व पर सोने चांदी के आभूषण खरीदने का एक रिवाज भी बन गया उसके साथ ही धनतेरस के दिन तांबा, पीतल और काँसे के बर्तन खरीदने की परंपरा है । प्रत्येक परिवार अपनी अपनी हैसियत के अनुसार खरीददारी करते हैं ज्यादा कुछ नहीं तो एक बर्तन भी अवश्य खरीदते हैं । साथ ही आज से ही घरों के बाहर दीपक लगाने भी आरम्भ हो जाते हैं ।

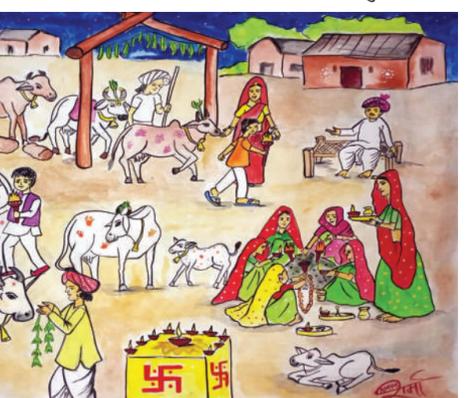
रूप चौदस : पांच दिवसीय दीपोत्सव का दूसरा दिन रूप चौदस के नाम से मनाया जाता है । जैसा की इसके नाम से ही स्पष्ट है इसका सीधा सीधा

सम्बन्ध महिलाओं से है । हम सब जानते हैं कि खरीफ की फसल की कटाई और गह्राई में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है । इसके बाद घर की साफ सफाई लिपाई पुताई करना इन सभी व्यस्तताओं में महिलाओं को सजने संवरने के लिए जतन भी समय नहीं मिलता है । इसलिए रूप चौदस का दिन केवल और केवल महिलाओं के लिए सजने संवरने का दिन है । महिलाएँ उबटन लगाकर स्नान करती हैं, बालों को धोती हैं विभिन्न प्रकार के सुगन्धित द्रव्यों से अपना साज श्रृंगार करती हैं । वैसे भी सज संवरकर सुंदर दिखाना महिलाओं की प्रकृति है, वे अपने स्वभाव के अनुसार रूप चौदस के दिन अपने इस शौक को पूरा करती हैं और अपने रूप को संवारकर पुरे उत्साह और उमंग के साथ दीपावली मनाती हैं ।

दीपावली : अमावस्या को दीपावली मनाई जाती है । हम सब जानते हैं कि भावार और राम के चौदह बरस के वनवास के बाद आज ही के दिन भगवान राम अयोध्या लौटे थे उसी की याद में दीपावली मनाई जाती है । हमारे अंचल में दीपावली से कई परम्पराएँ जुड़ी हुई हैं । उसमें दिवाली आगा, मेरिया और लक्ष्मी पूजन मुख्य है । जिन युवक युवातियों की नई नई शादी हुई है शादी के बाद उनकी पहली दीवाली तो दीवाली आगा किया जाता है । जिसमें वर पक्ष के लोग वधु को लेने के लिए जिसे लोक संस्कृति में आणा लाना कहते हैं । वधु के घर जाकर युवक पटाखे फोड़ते हैं आतिशबाजी करते हैं जिससे पूरे गाँव में पता लग जाता है कि अमुक कन्या का दीवाली आणा लेने मेहमान (सपराना) आये हैं । नव वधु अपने अपने घर आती हैं । फिर दीवाली के दिन नव जोड़ा मेरिया करता है । गाँव में बच्चे भी मेरिया करते हैं । मेरिया एक मशाल का रूप है जो हरी तुम्बी को काटकर बनाया जाता है । फिर उसमें गन्ने का एक टुकड़ा लगा दिया जाता है । फिर सूती कपड़े को फाड़कर बतियाँ बनाई जाती हैं जिसे काकड़ा कहा जाता है । उन बतियों को गन्ने के टुकड़े पर बाँधी दी जाती है फीर निचे के भाग को लाल मिट्टी से लीप दिया जाता है । इस प्रकार तैयार मेरिये को जलाया जाता है ।

बच्चे सबसे पहले उसे अपने पशुघर में ले जाते हैं, फिर रसोई में और फिर पुरे घर

में घुमाते हैं । इसके मूल में ये भाव है कि मेरिये के प्रकाश में घर परिवार में व्याप्त सभी प्रकार के सामाजिक, पारिवारिक और आर्थिक अन्धकार दूर हो जाए तथा देश समाज में सुख शांति वैभव और सम्पन्नता आये । उसके बाद बच्चे और नव दंपति मेरिया लेकर मोहल्ले में तथा अपने रिश्तेदारों के घरों में आज दिवाली काल दिवाली राती गाय नो मेरियु गाते गाते जाते हैं जहां उस घर की महिलाएँ उसमें तेल भरती हैं और मीठा मुँह करवाती हैं । कहीं कहीं ये मेरिया अमावस की रात को और कहीं कहीं सुबह चार पांच बजे भी किया जाता है । मेरिया हो जाने के बाद उस घर के बाहर आंगन में रख दिया जाता है । **गोवर्धन पूजा और नववर्ष** : एकम के दिन चौथा दिवस नववर्ष और गोवर्धन पूजा के रूप में मनाया जाता है । नववर्ष के दिन सभी लोग एक दुसरे के घर जाते हैं उन्हें शुभकामनाएं देते हैं मुँह मीठा करवाते हैं । उसके साथ साथ गोवर्धन जी स्थापना भी की जाती है । जो मेरिये घर के आंगन में रखे थे उन्हें प्रतिक रूप में गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत बनाकर उसमें लगा देते हैं । फिर उसकी पूजा की जाती है भोग लगाया जाता है । यह सिलसिला ग्यारस तक चलता है रोज सुबह घर में जो भी भोजन बनता है उसका भोग लगाया जाता है और सायं काल दीपक लगाकर रखा जाता है । ग्यारस के दिन गोवर्धन जी को उठाया जाता है अर्थात् गोबर से बनाये गोवर्धनजी को हटाकर उस स्थान की सफाई की जाती है । वहाँ पर पानी और दालुन रखा जाता है



। फिर देखा जाता है कि उस स्थान पर कितनी उकारियाँ पड़ी हैं (छोटे छोटे गड्डे) उनकी संख्या के आधार पर आने वाले वर्ष में होने वाले खाद्यान्न के उत्पादन की भविष्यवाणी की जाती है । फिर उस पर रंगोली बनाई जाती है सात प्रकार के धानो को उन उकारियों में भरा जाता है । कहीं कहीं आज के दिन अन्नकूट का आयोजन भी किया जाता है । इस प्रकार स्पष्ट होता है कि हमारे अंचल में गोवर्धन पूजा का सीधा सम्बन्ध खेती और खाद्यान्न से है । इसके बाद सभी किसान भाई अपने पशुधन को नहलाते हैं, उनके सींगो को रंगते हैं और उनके शरीर पर अपनी हथेलियों से मेहंदी के धब्बे लगाते हैं और उनके पुरे शरीर पर रंग बिरंगी हथेलियों के चित्र बन जाते हैं । उसके बाद पशुधन को चरने के लिए छोड़ दिया जाता है । शाम को गोधुली वेला में जब पशुधन के घर आने का समय होता है तो गाँव में प्रवेश के मार्ग में तौरण बांधा जाता है । सभी गाँव के लोग वहाँ एकत्र हो जाते हैं और देखते हैं की सबसे पहले किस रंग की गाय ने गाँव में प्रवेश किया है उसके आधार पर आने वाले वर्ष की भविष्यवाणी की जाती है । वागड़ अंचल में इस प्रथा को खेखरा के नाम से जाना जाता है । खेखरा हमारे जीवन में पशुधन के महत्व को दर्शाता है ।

भाईदूज : पांच दिवसीय दीपोत्सव का पांचवा दिन भाईदूज के रूप में मनाया जाता है । ये उत्सव हमारे अंचल में पारिवारिक और सामाजिक ताने बाने को मजबूती प्रदान करता है । वागड़ अंचल में इस दिन सभी भाई अपनी अपनी बहन के घर जाते हैं बहन भाई की पूजा करती हैं अच्छे अच्छे पकवान बनाकर खिलाती हैं और अपने भाई की लम्बी उम्र की कामना करती हैं । ऐसा माना जाता है कि आजके दिन भाई अगर अपनी बहन के घर जाता है तो उसकी उम्र लम्बी होती है उसके घर में सुख शांति और सम्पन्नता आती है । एक तरह से भाईदूज का ये पर्व जहाँ भाई और बहन के रिश्तों में मिठास भरता है वहीं समाज जीवन में नवीन उत्साह और उमंग लाता है । इस प्रकार दीपावली का ये त्यौहार जहाँ पंचतत्वों की पूजा अर्चना, सामाजिक ताने बाने की सुदृढ़ता के साथ आंचलिक प्रथाओं परम्पराओं को निभाने का प्रतीक है और साथ ही कृषि प्रधान समाज साथ अपनी खेती सम्पन्नता और पशुधन के सुव्यवस्था की कामना करता है । वहीं पर व्यापारी वर्ग अपने बही खातो को नव वर्ष में ले जाते हैं जिसके लिए चोपड़ा पूजन किया जाता है । लक्ष्मी पूजा करके परिवार के साथ साथ देश और समाज की आर्थिक सम्पन्नता की कामना करता है । इस वर्ष दीपावली सबके जीवन में देरी खुशियाँ लाये सभी के घरों में सुख समृद्धि आये खेत और खलिहान भरे भरे रहे इन्ही भावनाओं के साथ सभी को दीवाली की राम राम ।

सतीश आचार्य

मुश्किल समय में शासन प्रशासन सुध नहीं ले रहा था तभी चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा 16 मजदूरों का बना मददगार

यह वाक्या है सज्जनगढ़ ब्लॉक के बावड़ी पाड़ा गांव का जिसमें गांवों में लोग रोजगार नहीं होने के कारण रोजगार की तलाश में गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र इत्यादि राज्यों में मजदूरी करने के लिए जाते हैं लॉकडाउन के पश्चात बांसवाड़ा जिले के कामगार मजदूरों की हालत इतनी खस्ता हो गई कि इनका गुजर – बसर करना भी मुश्किल हो रहा था। तभी गांव के ही श्यामलाल ने बताया की गुजरात के भरूच जिले के पानोली गांव में मजदूरों की जरूरत है। परंतु क्या पता था कि हम किसी ठेकेदार के बहकावे में आकर कहीं ऐसे काम पर चले जाएंगे कि जीवन भर बेरोजगार होकर घर बैठना पड़ेगा। बांसवाड़ा चाइल्ड लाइन 1098 के जिला समन्वयक परमेश पाटीदार के द्वारा बताया गया का 12 मजदूर अपने तीन नाबालिक बालक बालिकाओं के साथ में गुजरात के भरूच जिले अंकलेश्वर थाना क्षेत्र में पानोली गांव के बजाज हेल्थ केयर प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में काम करने गए परंतु वहां पर हमारे सब के साथ शोषण किया गया। यह समस्त जानकारी चाइल्ड लाइन को दी गई जिस पर चाइल्ड लाइन के टीम सदस्य कमलेश बुनकर, शोभा सोनी ने गांव में पहुंचकर समस्त प्रकार की जानकारी ली। तो मजदूरों ने अपनी पीड़ा रोते हुए बताया कि आज से 2 माह पूर्व गुजरात के पानोली में मजदूरी करने गए थे परंतु हमें ऐसा पता नहीं था कि वहां पर कंपनी में काम करते करते हमारे आंखों की रोशनी चली जाएगी। हमारे पीछे हमारे बच्चों के लिए कमाने वाला कोई नहीं रहेगा। हमने वहां पर महीना भर काम किया ठेकेदार ने कुछ पैसा दिया कुछ नहीं दिया एवं वहां पर कुछ कैमिकल का ऐसा रिसाव हुआ जिससे कि हमें आंखों से दिखना बंद हो गया। वहां पर ठेकेदार के द्वारा हमारी कुछ जांच करवाई पर कोई फर्क नहीं पड़ा दिन-ब-दिन हमारी स्थिति बिगड़ती जा रही थी। हम चुपचाप वहां से घर चले आए। गांव आने के बाद चाइल्ड लाइन के टीम सदस्य कमलेश बुनकर ने समस्त प्रकार की जानकारी ली उसके पश्चात मजदूरों को साथ में लेकर सबसे पहले तो टीम के द्वारा सज्जनगढ़ थाने में मुकदमा दर्ज करवाया गया जिसमें मांग की गई कि हमारा बकाया भुगतान एवं जो हमारा आर्थिक नुकसान हुआ है उसकी भरपाई की जाए हमारे समुचित इलाज को व्यवस्था की जाए और जिस पर कंपनी के खिलाफ धारा 420, 406, 337 और 370 धारा के तहत मुकदमा दायर किया गया एवं टीम के द्वारा तीनों नाबालिक बालक बालिकाओं को बांसवाड़ा में वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक को भी दिखाया गया और दवाइयां दी गई साथ ही बताया गया कि इन दवाइयों से हफ्ते भर बाद फर्क पड़ जाएगा। जिसकी जानकारी सज्जनगढ़ थाना अधिकारी को भी दी गई एवं सहयोग के लिए बात की तो बताया गया कि जो मुकदमा दर्ज किया गया है उस मुकदमे की कॉपी लेकर हमारे यहां का कॉन्ट्रेबल वहां के थाने जाएगा एवं पूरी मदद की जाएगी और इन गरीब मजदूरों के साथ में पूरा न्याय किया जाएगा। जिस पर टीम ने वहां के ठेकेदार दिलीप पाटिल से भी बात की तो उसने बताया कि हमारे मजदूर आपकी कंपनी में आप के नेतृत्व में काम करने आए थे आपका फर्ज बनता है कि आप भी इनका ध्यान रखें परंतु आपने नहीं रखा। फिर टीम के द्वारा प्रारंभिक तौर पर खाद्यान्न उपलब्ध करवाया गया। सभी लोग वर्तमान में अपने घर पर सुरक्षित हैं और इनको कामयाबी 1098 पर कॉल करने पर ही मिली और इसी से ही सब संभव हो पाया जिसमें उनके द्वारा बताया की हमें आश्चर्य किया गया की आप सब की समस्याओं को सुना जाएगा एवं आपको राहत दी जाएगी। पहली बार पहला कामयाब मुकदमा दर्ज हुआ है जांच जारी है और सबसे पहली प्रार्थनिका है कि जल्द से जल्द बकाया भुगतान करवाया जायें। इसको लेकर चाइल्डलाइन के द्वारा अंकलेश्वर थाना अधिकारी एवं बांसवाड़ा के जिला कलेक्टर महोदय जी को भी सहयोग के लिए पत्र लिखा है।



सच्चा बचपन-बाल अधिकार सप्ताह

देश की जनसंख्या का 40 प्रतिशत भाग बच्चे हैं समता और समानता के मद्देनजर वंचित वर्ग के बच्चों के लिए बने सुरक्षा एवं विकास कार्यक्रमों के द्वारा सभी बच्चों के लिए अवसर, सुविधा और माहौल सुनिश्चित किये जाने की आवश्यकता है जिससे उनका सर्वोत्कृष्ट व्यक्तिगत विकास संभव हो सके। भारतीय संविधान के विभिन्न अनुच्छेद हैं जैसे 14,15, 15,(3), 19(1)(ए), 21, 21 (ए), 23 (1), 24, 39(इ), 39 (एफ), और 45 जिनका बच्चों के कल्याण और विकास से सीधा सम्बन्ध है। संयुक्त राष्ट्र के "सतत विकास लक्ष्य" में भी सभी बच्चों के अधिकारों का सम्मान करना एवं उनकी रक्षा करने की बात की गयी है एवं यह कहा भी जाता है कि "सतत विकास लक्ष्य" को "बाल अधिकारों" की प्राप्ति के बिना प्राप्त कर पाना असंभव है। देश की सामाजिक उन्नति, आर्थिक समृद्धि को बनाए और बचाए रखने, बच्चों की बुनियादी जरूरतों को पूरा कर पाने और विकासशील देश से विकसित देश के क्रम में आने के लिए नवाचारत्मक सोच और तरीकों से काम किया जाना बेहतर उपाय हो सकता है ताकि सभी बच्चों का पूर्ण विकास होना सुनिश्चित हो सके और बच्चे अपने जीवन का बेहतर तरीके से नेतृत्व करते हुए देश के उतम नागरिक की भूमिका में आ सकें। भारत में बाल दिवस दिनांक 14 नवम्बर को देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू की जयंती के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि देने के रूप में मनाया जाता है जबकि अंतर्राष्ट्रीय बाल दिवस दिनांक 20 नवम्बर को पूरे विश्व में मनाया जाता है क्योंकि 20 नवंबर वर्ष 1959 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने बाल अधिकारों की घोषणा को अपनाया था एवं इसी दिन वर्ष 1989 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने बाल अधिकारों पर कन्वेंशन को अपनाया था। बाल अधिकारों के बारे में बेहतर तरीके की सोच रखने वाले दुनियाभर के सबसे ज्यादा देशों ने मानवाधिकार संधि के रूप में "बाल अधिकार और संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन" अंतर्राष्ट्रीय कानूनी संरचना को अपनाकर प्रत्येक बच्चे से उसके अधिकारों की रक्षा करने और उन्हें पूरा करने का वादा किया था। इसलिए दिनांक 14 नवंबर से लेकर 20 नवंबर इस सप्ताह को "बाल अधिकार सप्ताह" के रूप में मनाया जाता है। इस संधि में एक गहन विचार निहित है कि "बाल्यावस्था वयस्कता से अलग है और जन्म लेने से 18 वर्ष की उम्र तक इंसान इसी अवस्था में रहता है। इस विशेष प्रकार से संरक्षित समय में, यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि बच्चे सम्मान के साथ जीने, सीखने, खेलने, विकसित होने और स्वस्थ बचपन जी सकें चूंकि ये उनके अपने अधिकारों की श्रेणी में आते हैं" समय रेखा के साथ बाल अधिकारों का उन्नयन/विकास

क्र.सं.	वर्ष	विवरण
1	1924	राष्ट्र संघ ने बाल अधिकारों पर जिनेवा घोषणा को अपनाया, घोषणा में कहा गया है कि सभी लोगों को बच्चों की परवरिश जो सामाजिक चेतना और कर्तव्य का संचार करती है: उनके विकास के लिए साधन; जरूरत के समय में विशेष मदद; राहत के लिए प्रार्थनिका; आर्थिक स्वतंत्रता और शोषण से सुरक्षा; और एक ऐसी परवरिश जो बच्चों के अधिकारों को सुनिश्चित करती है, पर ध्यान दिए जाने की जरूरत है।
2	1946	संयुक्त राष्ट्र महासभा ने दुनिया भर में बच्चों की हिमायत करते हुए अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष, यूनिसेफ की स्थापना की।
3	1948	संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा को पारित किया गया, जिसमें अनुच्छेद 25 माताओं और बच्चों को "विशेष देखभाल और सहायता" और "सामाजिक सुरक्षा" का अधिकार देता है।
4	1959	संयुक्त राष्ट्र महासभा बाल अधिकारों की घोषणा को अपनाती है, जो अन्य अधिकारों के अलावा, बच्चों के शिक्षा, खेल और बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए सहायक वातावरण और स्वास्थ्य देखभाल के अधिकारों को मान्यता देती है।
5	1966	नागरिक और राजनीतिक अधिकारों और आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंधों के साथ, संयुक्त राष्ट्र के सदस्य राज्य सभी बच्चों के लिए शिक्षा और सुरक्षा सहित समान अधिकारों को बनाए रखने का वादा करते हैं।
6	1968	सार्वभौम घोषणा को अपनाने के बाद से 20 वर्षों में देशों द्वारा की गई प्रगति का मूल्यांकन करने, भविष्य के काम के लिए एक एजेंडा तैयार करने और मानवाधिकारों को कायम रखने के लिए राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं को मजबूत किये जाने के लिए मानवाधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में किया गया।
7	1973	अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन "कन्वेंशन 138" को अपनाते हुए जो किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, सुरक्षा या नैतिकता को ध्यान में रखते हुए खतरनाक काम करने के लिए न्यूनतम आयु 18 वर्ष निर्धारित करता है।
8	1974	महिलाओं और बच्चों से जुड़ी आपात और असंगत स्थितियों के बारे में चिंतित, महासभा सदस्य राज्यों से आपातकाल और सशस्त्र संघर्ष में महिलाओं और बच्चों के संरक्षण पर घोषणा का पालन करने का आह्वान करती है। घोषणापर नागरिक महिलाओं और बच्चों के खिलाफ हमलों या कारावास को प्रतिबंधित करता है और सशस्त्र संघर्ष के दौरान महिलाओं और बच्चों के अधिकारों के प्रति गंभीरता को कायम रखता है।
9	1978	मानवाधिकार आयोग सदस्य राज्यों, एजेंसियों और अंतर-सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के एक कार्यकारी समूह द्वारा विचार के लिए बाल अधिकारों पर एक सम्मेलन का मसौदा तैयार करता है।
10	1979	बाल अधिकारों की 1959 की घोषणा की बीसवीं वर्षगांठ को चिह्नित करने के लिए, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 1979 को अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के रूप में घोषित किया, जिसमें यूनिसेफ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
11	1985	किशोर न्याय के प्रशासन के लिए संयुक्त राष्ट्र के मानक न्यूनतम नियम एक न्याय प्रणाली के सिद्धांतों का विस्तार करते हैं जो शिक्षा, सामाजिक सेवाओं और बाल बंदियों के लिए तुलनात्मक रूप से बेहतर व्यवहार सहित बच्चे के सर्वोत्तम हितों को बढ़ावा देता है।
12	1989	संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा और सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, नागरिक और सांस्कृतिक अभिनेताओं के रूप में बच्चों की भूमिकाओं को मान्यता देते हुए, बाल अधिकारों पर कन्वेंशन अपनाया गया है। मानवाधिकारों के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में व्यापक रूप से प्रशंसित है। कन्वेंशन सभी क्षमताओं में बच्चों के अधिकारों को ध्यान में रखते हुए न्यूनतम मानकों का निर्धारण कर इनकी रक्षा का वायदा करता है। यूनिसेफ, जिसने कन्वेंशन का मसौदा तैयार करने में मदद की, दस्तावेज में विशेषज्ञता के स्रोत के रूप में नामित किया गया है।

जनजातीय क्षेत्र और कोविड-19 महामारी के दौरान बाल अधिकारों की स्थिति

कोविड-19 वैश्विक महामारी के दौर में दक्षिणी राजस्थान के वागड़ क्षेत्र के जनजातीय क्षेत्रों में बच्चे अपने अधिकारों से वंचित हो रहे हैं। पूर्व से ही इन क्षेत्रों में बच्चों में कुपोषण एवं अति कुपोषण का प्रसार अधिक है एवं महामारी के चलते, बेरोजगारी में वृद्धि एवं परिवारों में उत्पन्न हुई खाद्य एवं पोषण असुरक्षा के कारण बच्चों का खान-पान ठीक से नहीं हो पाया और बच्चों में कुपोषण और अतिकुपोषण का स्तर अधिक बढ़ने की पूर्ण संभावना है। महामारी के चलते विद्यालयों एवं आंगणवाडी केन्द्रों के बंद होने से शिक्षा, खेल-कूद, पोषाहार व्यवस्था एवं बच्चों के विकास हेतु आवश्यक अन्य गतिविधियाँ पूरी तरह से बाधित हो गयी। बच्चों में घरों में रहकर सीमित दिनचर्या के तहत, एकाकी जीवन जीने एवं हमउम्र साथियों के साथ समय नहीं बिता पाने के कारण मानसिक रूप से नकारात्मक असर देखने को मिले हैं। अन्य रिश्तेदारों से मिलना-जुलना और सामाजिक उत्सव भी बंद हो जाने के कारण बच्चों के लिए जीवन और विकास का यह दौर और भी अधिक पीड़ादायी हो गया था और परिणामतः बच्चे अपने अधिकारों को पूरी तरह से नहीं जी सके। यह तो सर्व विदित है कि गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वालों के लिए अपने जीवन का नेतृत्व कर पाना, अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा कर पाना बहुत मुश्किलों से भरा होता है। आंकड़े बर्बाद करते हैं कि देश में गरीबी का असर बच्चों के जीवन को भी नकारात्मक तरीके से प्रभावित कर रहा है। "बाल विकास एवं बाल अधिकारों के संरक्षण" हेतु कानून में विभिन्न प्रावधान किए गए हैं जिसके अंतर्गत बच्चों को चार विशेष अधिकार प्राप्त हैं।

- 1. जीवन जीने का अधिकार:** राजस्थान प्रदेश के जनजातीय जिले बांसवाडा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, उदयपुर एवं सिरोंही में बच्चों में कुपोषण का स्तर सर्वाधिक है तथा यहाँ पर अधिकांश महिलाओं में खून की कमी (एनिमिया) है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 4 (2015-16) की रिपोर्ट के अनुसार भारत में कुपोषण (5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में) की दर 35.8%, राजस्थान में 36.7% एवं जनजातीय जिलों में औसतन 52.22% हैं। इसी तरह भारत में 15-49 वर्ष की महिलाओं में एनीमिया की दर 53.1%, राजस्थान में 46.8% एवं आदिवासी जिलों में औसतन 68.46% है। बच्चे के जीवन और उनकी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति जैसे कि: आश्रय, पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच सम्मिलित करता है। जिससे कि बच्चे के लिए संतोषप्रद जीवन स्तर बनाते हुए जीवन जी पाना तय हो सके लेकिन महामारी के दौरान बढ़ी बेरोजगारी के कारण और इस दौरान चूँकि विद्यालय बंद थे और बच्चों को मिड डे मील भी नहीं मिल पा रहा था। ऐसे में बच्चों का पोषण पूरी तरह से बाधित हो गया एवं पोषण असुरक्षा में वृद्धि हुई।
- 2. विकास/संरक्षण का अधिकार:** यह उन तमाम अधिकारों को शामिल करता है, जिनसे बच्चे का सम्पूर्ण विकास सुनिश्चित किया जा सके, जैसे निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार, खेल और मनोरंजन के भरपूर अवसर, अवकाश के समय में आराम, निर्णय लेने में भागीदारी जिससे बालकों का शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक क्षमता का विकास हो सके। लेकिन कोविड 19 के कारण विद्यालय बंद थे, ऑनलाइन शिक्षा सब बच्चों तक पहुँच सके ऐसी सुविधाएँ आदिवासी/जनजातीय क्षेत्रों में संभव नहीं हो पा रही थी और चूँकि घरों से बाहर निकलना बंद था अतः अन्य बच्चों के साथ मिलकर खेलकूद और मनोरंजन की सामूहिक गतिविधियाँ पूरी तरह से बंद हो गयी थीं। राजस्थान के स्कूलों में बुनियादी ढाँचागत सुविधाओं का अभाव और गुणवत्तायुक्त शिक्षा की कमी के चलते छात्र और छात्राओं का उत्साह कम हो जाता है परिणामस्वरूप बच्चे स्कूल जाना छोड़ देते हैं और बाल विवाह एवं बालश्रम का शिकार होते हैं। ASER (2018) रिपोर्ट के अनुसार, ग्रामीण राजस्थान के 17.7% स्कूलों में पीने के पानी की सुविधा नहीं है, 13.8% शौचालय उपयोग में आने की स्थिति में नहीं हैं एवं 17.1% स्कूलों में छात्र और छात्राओं के लिए खेल का मैदान नहीं है। इसके साथ ही प्रत्येक विद्यालय में स्थापित विद्यालय प्रबंधन समिति का सुचारू रूप से संचालन नहीं किया जा रहा। पलायन का विपरीत प्रभाव बच्चों की शिक्षा पर पड़ता है और बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं जो कि बच्चों का जन्मजात अधिकार है। परिवार में गरीबी के कारण और बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए बच्चे बालश्रम में भी लिप्त हो जाते हैं। जनजातीय क्षेत्रों में गरीबी के कारण हिंसा, बच्चों को बचपन से ही घरेलू कार्य में लगा देना और कई जगहों पर घरों से विद्यालयों की दूरी आदि विभिन्न बाधाओं के कारण बालिकाएँ या तो शिक्षा से जुड़ ही नहीं पाती या फिर जल्द ही शिक्षा से छूट जाती हैं।
- 3. सुरक्षा का अधिकार:** यह अधिकार मांग करता है कि बच्चे हर तरह की उपेक्षा, क्रूरता और शोषण से मुक्त जीवन जी सकें। बच्चे के बेहतर विकास और विशेष देखरेख के साथ दंडिक न्याय प्रणाली में बच्चों के उत्पीड़न, बाल मजदूरी, ड्रग उत्पीड़न, एवं शोषण के खिलाफ सुरक्षा हो। इतना ही नहीं किसी भी तरह की यौनिक हिंसा, शारीरिक हिंसा, मानसिक हिंसा या घरेलू हिंसा से बच्चे को दूर रखते हुए विकास के सभी अवसर



मिल सके। महामारी के दौर में परिवार में बढ़ी बेरोजगारी के कारण घरेलू हिंसा बढ़ी जिसके कारण घर के सकारात्मक माहौल पर असर हुआ और इस वजह से बच्चों का मानसिक विकास प्रभावित हुआ बच्चे अपने आपको असुरक्षित महसूस करने लगे, परिवार का घर खर्च निकाल सके इसलिए बच्चों को मजदूरी पर भेजकर बाल मजदूरी को बढ़ावा मिला और बाल विवाह की संख्या भी पहले की तुलना में बढ़ गयी है। जो कि बच्चों के सुरक्षा के अधिकार का हनन करता है।

4. सहभागिता का अधिकार: बच्चा जब युवावस्था और इससे आगे बढ़े तो स्वयं और देश के निर्माण में आत्मनिर्भरता के साथ सोच समझकर फैसले ले सके। इसके लिए जरूरी है कि निर्णय लेने की शुरुआत समझदारी आने के साथ ही कर दे। बच्चा अपने घर में पारिवारिक माहौल में रहकर और शाला में अपने शिक्षकों और अपने हमउम्र साथियों के साथ रहकर विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरते हुए यह सब सीख पाता है। इसके लिए हम बड़ों की जिम्मेदारी बनती है कि बच्चों को बेहतर माहौल और अवसर मिल पाना तय करें, बच्चों को बिना किसी भय के अपनी बात कहने या अनिच्छित की स्वतंत्रता मिले और बच्चों की स्वतंत्र और सक्रिय भूमिका के चलते समुदाय और समाज में भावी पीढ़ियों का राष्ट्रीय स्तर पर दखल और संगठनों में उनकी शांतिपूर्ण सहभागिता को मजबूती मिल सके। यह तभी संभव है जब विद्यालयों में बच्चों के लिए भयभीत करने वाले माहौल की बजाय खुलकर अपनी बात कहने के मौके हों और बच्चों द्वारा कही गयी बात को धैर्य के साथ सुनना और सुनकर रचनात्मक दृष्टिकोण को अपनाते हुए तथा समस्याओं का मिलकर समाधान निकालने वाली सोच के साथ काम किये जाए। ये काम परिवार और ग्राम स्तर पर भी किये जाने की उतनी ही माँग करता है। चूँकि महामारी के दौर में अकेले में रहकर जीवन जीना एक मजबूरी बन गयी जिसके चलते बच्चों के आत्मविश्वास में कमी आई बच्चों का सामाजिक विकास बाधित हो गया।

मुख्य अनुशंसायें:

- प्रत्येक विद्यालय में कुपोषण मुक्त अभियान के सुदृढीकरण की आवश्यकता है जिसके अंतर्गत छात्र-छात्राओं को प्रति सप्ताह पोषण के प्रति जागरूक करना, स्वास्थ्य जाँच की नियमितता, प्रत्येक किशोरी बालिका को आयुर्विज्ञान एडिड टेबलेट का वितरण, तथा साथ ही विद्यालय प्रांगण में स्थानीय पौष्टिक फल एवं सब्जियों की पोषण वाटिका को स्थापित किया जाये।
- पंचायत स्तर की बाल संरक्षण समिति को पुनर्जीवित करते हुए सक्रिय बनाने की आवश्यकता है।
- जनजातीय क्षेत्रों में रोजगार हेतु परिवार के पलायन की स्थिति में बच्चे शिक्षा से वंचित हो जाते हैं यदि उनके बच्चों के अनुपात में तय आवासीय विद्यालयों की संख्या बढ़ाई जाये तो माता-पिता पलायन के समय अपने बच्चों को इन आवासीय विद्यालय से जोड़कर बच्चों का शिक्षा से जुड़ाव बनाये रख सकते हैं।
- विद्यालयों में "बाल सभा" आयोजित करने हेतु सरकार द्वारा दिशा-निर्देश बनाया जाये एवं उनका प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए। ग्राम सभा में बच्चों के अधिकारों से जुड़े मुद्दों को सम्मिलित किया जाये।





दिवाली के बाद पलायन एक समस्या

प्रिय पाठको जैसा की आप जानते हो की दिवाली के बाद हमारे गाँवो से कई परिवार रोजगार की तलाश में गुजरात, महाराष्ट्र राज्यों में पलायित होंगे। क्यूँकि अभी दिवाली से पहले फसल कटाई का कार्य भी था तो यह परिवार वापस लौट कर आ गये थे और अपने खेतों में खड़ी फ़सल की कटाई करने के बाद परिवार के साथ दिवाली का त्यौहार मनाएँगे। और फिर से आगामी 6 माह के लिए पलायन करने को तैयार है, जबकि यह समय हमारी रबी की खेती के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण समय है, ऐसे में इनको चाहिए की पलायन की जगह अपनी खेती बाड़ी को प्राथमिकता देवे, अगर ज्यादा जरूरी है तो परिवार से कोई एक सदस्य पलायन करे और बाकी सदस्य यहीं रहकर अपनी खेती को भी संभाले और साथ ही अपने बच्चों की देखभाल भी करे और उनकी शिक्षा को सुरक्षित करे। फ़रवरी- मार्च में बच्चों के परीक्षा का भी समय है और चूँकि लगभग विगत दो वर्षों से हमारे बच्चों की शिक्षा को कोरोना ने बुरी तरह प्रभावित भी किया है, इसलिए अभी हालात सामान्य है और स्कूल भी चल रही है, अभी दिवाली की छुट्टियों के बाद स्कूल वापस खुल जाएँगे तो हम सबकी जिम्मेदारी है की उनको नियमित स्कूल भेजे और घर पर भी समय निकाल कर बच्चों की शिक्षा को लेकर उनसे बात करते रहे, ताकि जब परीक्षा का समय हो तो हमारे बच्चों पहले से ही अच्छी

तरह तैयार हो। साथ ही आप सभी जानते है की यह समय मौसमी विमारियों का भी है तो उनसे बचाव भी बहुत जरूरी है, इसलिए अगर आप रोजगार की तलाश में बाहर जाते है तो यह सम्भावना है की आप भी इन मौसमी बिमारियों की गिरफ़्त में आ सकते है। स्थानीय स्तर पर पंचायत पर आवेदन कर नरेगा के लिए आवेदन कर गाँव के विकास का कार्य शुरू करवा सकते है ताकि स्थानीय स्तर पर रोजगार भी मिल जाएँ।

मजदूरों के गैरहाजिर होने की संभावना ज्यादा रहती है व पलायन करके आए मजदूर ठेकेदार का कहना करते रहते है, ऐसा भी देखा गया है कि शहरों से ठेकेदार गाँव आते हैं और मजदूरों को बहला-फुसला कर कई तरह के प्रलोभन देकर शहर की ओर लेकर जाते हैं और फिर ये मजदूर बंधुआ मजदूरों की जिनगी जीते हैं।

स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर :- गाँवों से शहरों की ओर हो रहे पलायन को रोकने के लिए अनेक योजनायें संचालित है एवं सरकार की कोशिश है कि गाँव के लोगों को गाँव में ही रोजगार मिले। उन्हें गाँव में ही शहरों जैसी आधारभूत सुविधाएँ मिले। "महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना" के लागू होने के बाद पंचायती राज व्यवस्था काफी सुदृढ़ हुई है। सबसे ज्यादा फायदा यह हुआ है कि ग्रामीणों के पलायन में कमी आई है। लोगों को गाँव में ही काम मिल रहा है, मजदूरों में इस बात की खुशी है कि उन्हें काम के साथ ही सम्मान भी मिला है। कार्यस्थल

पर उनकी आधारभूत जरूरतों का भी ध्यान रखा गया है। लेकिन अभी भी जनजातीय क्षेत्र में बहुत सारे परिवार ऐसे है जो पूरे परिवार के साथ ही पलायन कर जाते है जिससे यहाँ पर मनरेगा जैसी महत्वपूर्ण योजना का लाभ नहीं ले पाते है जिस पर हमारा मानना है की अगर पलायन होना भी है तो परिवार के किसी एक सदस्य को जाना चाहिए। पंचायत स्तर पर नरेगा के बाकी बचे दिनों के लिए आवेदन कर गाँव के विकास का कार्य शुरू करवा सकते है ताकि स्थानीय स्तर पर रोजगार भी मिल जाएँ।

पलायन से होने वाले दुष्परिणाम :-

- खेती को होने वाले नुकसान
 - बच्चों की शिक्षा प्रभावित
 - भूमि पर अन्यत्र लोगों का काबिज होना
 - स्वास्थ्य की समस्या
 - शहरों से बीमारी गाँवों तक लाना
- इसलिए अंत में सभी पाठको से यही निवेदन करना चाहूँगा की सामूहिक प्रयासों से दिवाली के बाद कम से कम लोग पलायन करे इसके लिए स्वयं को आगे आना होगा, जिससे स्थानीय स्तर पर हमारी खेती, बच्चों की शिक्षा, खुद का स्वास्थ्य इत्यादि को सुरक्षित किया जा सके।



जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की गतिविधियाँ

हिरन

आप सबने जय गुरु ने दिवाली नु राम –राम जनजातीय स्वराज संगठन हिरन के सभी कर्मठ स्वराज साथियों व पाठको को जय गुरु,जैसा की हम सभी को विदित है कि यह समय हमारे समुदाय के लिए काफी कठिन व चुनौतियों भरा है खेती बाड़ी में फसल कटाई चल रही है, बिन मौसम बारिश होने की संभावना बनी हुई है हमारा एक पैर खेत में और एक पैर घर में है, हमारे घर की महिलाएँ सभी घर और खेती बाड़ी के काम में व्यस्त है। हम खरीफ की फसल कटाई एवं सहेजने के साथ साथ रबी की फसल की तैयारी भी कर रहे है। स्वास्थ्य संबंधित समस्या जैसे मलेरिया, डेंगू, विषाणु का प्रकोप, सर्दी जुकाम आदि अभी जोरों पर है। "समस्त जन से निवेदन है अपना ध्यान खुद रखे, सतर्कता बरते, खुद बचे और दूसरों को बचाए"।

इस माह मुख्यतय संगठन की बैठक आयोजित की गई, ग्राम विकास एवं व्यक्तिगत विकास की योजनायें ग्राम सभा में सम्मिलित हुई, सरकार द्वारा आयोजित प्रशासन गाँव के संग शिविर में लोगों की समस्याओं का निदान करवाया, विरासत स्वराज यात्रा का भव्य आयोजन हुआ, विश्व खाद्य परियोजना एवं कुपोषित बच्चों का सर्वे किया गया।

सच्चा स्वराज :-सच्चा स्वराज के तहत हिरन इकाई के 356 गाँवों के

4 पंचायत समितियों के साथ मिलकर ग्राम विकास योजना निर्माण के लिए सभी ग्राम पंचायतों के सरपंच और वार्डपंच व संगठन के साथियों का प्रशिक्षण किया गया था जिसमें मुदा स्वराज और जल संरक्षण एवं सामुदायिक और व्यक्तिगत कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर कार्य योजना निर्माण कर संगठन द्वारा इसग्राम विकास की कार्य योजना को गाँधी जी की जन्म जयंती 02 अक्टूबर 2021 को आयोजित सभी 105 ग्राम सभाओं में अपनी अपनी ग्राम पंचायत से प्रस्ताव जमा कराए गए। इस माह सभी 09 जनजातीय स्वराज संगठन की मासिक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें ग्राम विकास योजना निर्माण, विरासत स्वराज यात्रा आयोजन का अहम मुद्दा रहा। चार्ल्ड हेल्प लाइन 1098 के माध्यम से जरूरतमंद, पीड़ित बच्चों को सुविधाएँ उपलब्ध करवाना और गंभीर परिस्थिति वाले बच्चों के बारे जानकारी देना। ये सभी कार्य करने में मुख्य भूमिका सहजकर्ता, स्वराज मित्र एवं सक्षम समूह, ग्राम विकास बाल अधिकार समिति एवं जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्यों की रही। सभी संगठन की बैठक में संगठन की मजबूती पर चर्चा की गई।

सच्चा बचपन :- सच्चा बचपन के तहत हिरन इकाई के 356 गाँवों में से 352गाँवों में ग्राम विकास बाल अधिकार समिति की बैठक का आयोजन किया जिसका उद्देश्य ग्राम सभा में सम्मिलित ग्राम विकास योजना का फॉलोअप एवं बालिका शिक्षा और ड्राप आउट बच्चों की सूची तैयार कर उन्हें शिक्षा से पुनः जोड़ना व अनाथ बच्चों को पालनहार योजना से जोड़ना रहा। कोरोना की तीसरी लहर को ध्यान में रखते हुए समुदाय व बच्चों को जागरूक करना रहा एवं कोरोना टीकाकरण के प्रति जागरूक किया गया। इस माह 105 ग्राम पंचायतों में बाल सभा का भी आयोजन किया गया जिससे बच्चों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना एवं खेल खेल के माध्यम से बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास करना रहा व बच्चों में नेतृत्व क्षमता का विकास करने पर

चर्चा की गई। इस माह सच्चा बचपन कार्यक्रम के तहत अतिकुपोषित बच्चे जिनका आंकलन पोषण स्वराज अभियान के दौरान किया गया था। जिसमें चिकित्सकीय जटिलता वाले बच्चों को कुपोषण निवारण केंद्र भेजा और बिना चिकित्सकीय जटिलता वाले बच्चों को आंगनवाड़ी केन्द्रों पर उचित पोषाहार व घर पर बने सम्पूर्ण आहार खिलाकर सामान्य स्थिति में लाने का प्रयास 15 दिन शिविर लगा कर उपचार एवं जागृत लिया था उन बच्चों का पुनः निरक्षण कर फोलो –अप किया गया, बच्चों की माता एवं परिवार के साथ बातचीत कर उन्हें समझाया गया। घर पर बच्चों का सम्पूर्ण आहार बनाने के लिए तिरंगा भोजन (तीन रंग का भोजन) जिसमें स्पेफेद यानी अनाज व पिला जिसमें दाल और हरा जिसमें हरी सब्जियाँ शामिल हो इस तरह के भोजन को रोजाना बच्चों को खिलाना जरूरी है जिससे बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास पूरी तरह से हो सके।

सच्ची खेती:- सच्ची खेती कार्यक्रम के तहत 354 सक्षम समूह की बैठक की गई। बैठक के दौरान बीज विविधता पर अभ्यास, अनुमानित उत्पादन, फसल की स्थिति पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। वर्तमान परिस्थिति में अधिक उत्पादन पैदावार के लिए समुदाय द्वारा रासायनिक खाद और दवाई व कीटनाशक का उपयोग ज्यादा किया जाने लगा है जिसके कारण लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ने लगा है जिसका उदाहरण कोरोना माहमारी में देखने को मिला है। इसी को ध्यान में रखते हुए संस्था द्वारा जैविक खेती जिसके अंतर्गत वर्मी खाद कम्पोस्ट पीट व कीटनाशक हेतु दशपर्णी दवाई व बीज उपचार आदि पर जनजातीय समुदाय के 356 गाँवों में महिला किसानों का प्रत्येक गाँव में एक समूह बना हुआ है। उस समूह को हर माह प्रशिक्षित करना और उन महिलाओं के द्वारा गाँव और रिश्तेदारी में अन्य किसानों को जैविक खेती के बारे में जागरूक करने का काम किया जा रहा है। वाग्धारा संस्था द्वारा सच्ची खेती के अंतर्गत जैविक तरीकों से परम्परागत खेती को वापस बहाल करवाने हेतु प्रयास किये जा रहे है तथा जैविक कीटनाशक जैविक खाद इत्यादि बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है इस माह में PGS जैविक ग्रुप की कुल 128 मीटिंग हुई है जिसमें जैविक कृषि संबंधी क्रियाकलाप के बारे में किसानों को जागृत किया गया है तथा जैविक कृषि पद्धति अपनाकर इससे होने वाले फायदे के बारे में बताया गया है तथा अधिक से अधिक किसान जो जैविक कृषि में रुचि रखते हैं उन्हें सभी जैविक गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है। इसी क्रम में इस माह तहसील स्तरीय जैव विविधता आंकलन शिविर आयोजित किये गए। शिविर के दौरान अनाज, देव अनाज, दाले, तिलहन, सब्जियाँ, फल,

कन्द, मूल, वनोऔषधियाँ आदि का आंकलन किया गया। विरासत स्वराज यात्रा :- विरासत स्वराज यात्रा का शुभारम्भ 02 अक्टूबर 2021 को वाग्धारा परिसर से हुआ जो 14 अक्टूबर 2021 को बाजना, 15 अक्टूबर 2021 को कुशलगढ़, 16 अक्टूबर 2021को थान्दला एवं 17 अक्टूबर 2021 को सज्जनगढ़ पहुँची। यात्रा का स्वागत जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्यों ने किया। इस दौरान 2000 से भी ज्यादा स्त्री – पुरुष ने भाग लिया। यात्रा इकाई के सभी 356 गाँवों में पहुँची एवं स्थानीय समुदाय द्वारा हर गाँव – गाँव, फला – फला यात्रा का स्वागत किया। साथ ही जनजातीय स्वराज संगठन द्वारा तहसील स्तरीय सम्मलेन का आयोजन किया गया। सम्मलेन में संगठन से जुड़े भाई बहनों द्वारा लाई गई मिट्टी, बीज, फल, सब्जियाँ, वनोऔषधियाँ की पूजा की गई एवं जल स्वराज, जंगल स्वराज, मिट्टी स्वराज, बीज स्वराज, खाद्य एवं पोषण स्वराज एवं वैचारिक स्वराज पर चर्चा की गई साथ ही प्रदर्शनी लगाई गई, रंगोली बनाई गई, पुराने कृषि एवं घर के उपयोग के औजार रखे गए ताकि नई पीढ़ी उन्हें देख और सीख सके। बाजना में देवली, कुशलगढ़ में धिकली, थान्दला में भीमपुरी एवं सज्जनगढ़ के आमली पाडा में सम्मलेन हुआ।

सोहन नाथ जोगी

जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई हिरन, वाग्धारा



माही

!! हेतने मारु राम-राम !! मेरे विभिन्न संगठनों के साथियों आप सभी ने गत माह के अंत में हर संगठन ने अपने खंड स्तर पर वाग्धारा द्वारा आयोजित एक दिवसीय वातावरण अनुकूलित ग्राम विकास योजना पर प्रशिक्षण प्राप्त किया जिसके पश्चात हमने मिलकर इस माह महात्मा गाँधी नरेगा अंतर्गत ग्राम विकास योजना एवं व्यक्तिगत कार्यों के लिए बहुत मेहनत की। जिसका अपेक्षित परिणाम यह रहा की इस बार हमने अधिक से अधिक कार्य मुदा संरक्षण की योजना को लेकर बचावए और ग्राम सभा में अनुमोदित करवाए। साथियों इस माह हमने विरासत स्वराज यात्रा की शुरुआत गाँधी जयंती के मौके पर की जिसमें इस बार हमारे यहा जल पुरुष माननीय श्री राजेंद्र भाई पवार और माननीय श्री जयेश भाई के साथ इस कार्यक्रम को हरी झंडी दिखा कर इसका शुभारम्भ किया जिसके बाद यह यात्रा हमारे इकाई साबला-आसपुर-घाटोल एवं पीपलखुंट होते हुए हिरन इकाई की ओर प्रस्थान किया और अंत में इसका स्वागत मानागढ़ धाम में किया गया। इस माह अपनी ईकाई माही में निम्न कार्यक्रमों को पूर्ण किया गया-

स्वराज –इस माह में हमारे संगठनों ने ग्राम विकास की योजना को लेकर ग्राम स्तर तक कार्य किया जो काफी सराहनीय रहा जिसमें हमारे सभी संगठनों ने अभी तक विकास की योजनाओं से वंचित परिवारों का PLA के माध्यम से चयन कर इन सभी परिवारों को ग्राम सभा तक ले जाने में सक्षम हुए और साथ ही महात्मा गाँधी नरेगा की कार्य योजना में मुदा संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया गया और अधिक से अधिक वंचित परिवारों के कार्य अनुमोदित करवाए गए। इसी क्रम में इस माह हमने हमारे कार्यक्षेत्रों में 02 अक्टूबर से वाग्धारा के तत्वाधान में विरासत स्वराज यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें हमारे खंड में साबला-आसपुर-घाटोल एवं पीपलखुंट में यह रथ चला एवं समुदाय के मध्य जा कर हर खंड के एक स्थान पर जल स्वराज, मिट्टी स्वराज, बीज स्वराज, वन स्वराज, खाद्य एवं पोषण स्वराज एवं वैचारिक स्वराज पर विस्तृत चर्चा की गई जिसमें समुदाय और वाग्धारा से श्री रविन्द्र रकवाल,हेमंत आचार्य ने जल संरक्षण के तरीके इसका महत्त्व,मिट्टी की वर्तमान स्थिति रासायनिक जाल से छुटकारा,बीज का हमारे जीवन में महत्त्व उन्नत बीज का प्रयोग,हमारे वनों से उपज लेना, पोषण के लिए हमारे छोटे बीज एवं इनका उपयोग, आपसी संवाद ग्राम विकास को लेकर ग्राम चोपाल और पशुपालन और इसके दुरगामी परिणाम पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। साथियों संस्करण के माध्यम से हमारे सभी भाई – बहन यात्रा में सम्मिलित हुए। इसी के साथ समुदाय के लिए सन्देश है की यह विचारधारा हमारे माध्यम से हर ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति,सक्षम समूह में पहुँचे ताकि हम एक बार पुनः स्वराज की ओर अग्रसर हो सके।

बचपन –इस बार हमारे लिए सबसे सुखद अनुभव रहा की हमारे बच्चों के विद्यालय लम्बे अंतराल के बाद खोले गए है जिससे बच्चे एक बार पुनः शिक्षा की धारा से जुड़ जाएँगे,इस माह हमारे संगठनों में से अमर सिंह का गढ़ा,घाटोल,चंद्र जी का गढ़ा और भूंगाडी का ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति के सदस्यों ने विद्यालय से वंचित बच्चों को चिह्नित कर एक बार और विद्यालय प्रशासन के साथ मिलकर पुनः शिक्षा की धारा से जोड़ने में सफल रहे। इस बार हमारे विभिन्न संगठनों ने अपने मार्फत से प्रशासन गाँवों के संग के

माध्यम से 84 बच्चों को पालनहार योजना से जुडवाया जो वाकई संगठनों की बड़ी सफलता है साथ ही इनको ग्राम स्तर से सारणी बनाने में भी हमारे ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति, सक्षम समूह और बच्चों के लिए कार्यरत उनकी खुद की समिति बाल पंचायत ने भी अपनी मुख्य भूमिका बाँधी है।

साथियों हमारे बाल पंचायत पर बात की जायें तो इस बार ग्राम विकास योजना के तहत ग्राम सभा में गाँव में खेल मैदान का प्रस्ताव रखा है जिससे हमे अब महसूस हो रहा है की हमारी बाल पंचायत सशक्त होने के कगार पर आई है साथ ही गाँव में विभिन्न बच्चों से जुड़े मुद्दों पर भी इस माह 59 बाल पंचायत ने बैठक आयोजित की जिसमें मुख्यत बच्चों के बाल श्रम, शिक्षा से वंचित बच्चों की सूची बना कर ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति के समक्ष प्रेषित की ताकि गाँव का बड़ा संगठन इसको बारीकी से देख सके।

एक बार में इस संस्करण के माध्यम से उन समस्त गुरुजनों का आभार प्रकट करता हंडू जिन्होंने इस कोरोना काल में बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखा चाहे वो 05 -05 के समूह में पढाया हो या उससे अधिक हो। **खेती** – इस बार हमें उत्पादन के अनुरूप उपज नहीं मिली है जिसका हमे और हमारे किसान भाई बहनों को खेद है और इसी के साथ साथियों मुझे इस बार हमारे पूर्वजों की फसल तकनीकी बहुत याद आई आपको ध्यान हो तो हमारे पूर्वज कभी एक फसल नहीं करते थे उनको पता रहता था की अगर बारिश अधिक हो गई तो मेरी ये फसल तो नष्ट हो जाएगी और कम हुई तो भी ये फसल नष्ट हो जाएगी तो इन सभी चक्र को समझते हुए हर फसल का चयन करते थे जिसमें होता ये की हमें आज से 20 वर्ष पूर्व हर प्रकार का अनाज मिल जाता परन्तु अब हमें सोचना पड़ेगा की अब क्या कर सकते है और कहा पहुँच गये है। परन्तु हमें साथियों हार नहीं माननी है हम अगले वर्ष से ही नहीं बल्कि रबी फसलों में भी हर प्रकार का अनाज या दलहन उगाएँगे ताकि हमे हर तरह का अनाज और दाले मिल सके।

साथियों हमारे क्षेत्र में अब किसान बहने देशी तरीको को एक बार पुनः समझ रही है और अपने खाने के उपयोग के लिए देशी बीज को बचाना हो या देशी खाद का उपयोग अपने पढाया के खेत पर करना हो या पशुपालन को बढ़ावा देना हो यह सब अब निकल के आने लगा है जिसकी मुझे या मेरी किसान बहनों को खुशी है। साथियों हम अक्टूबर में दो बार जुलाई करते हैं। फसल का चयन करते समय अलग-अलग लम्बाई की जड़ों (मूसला व जकड़ा जड़) वाली फसल जैसे- गेहूँ, चना, अलसी, सरसों आदि की बुवाई एक साथ करते हैं। क्योंकि कठिया गेहूँ की जड़ दो से तीन इंच लम्बी होती है, चने की जड़ 6 से आठ इंच तक लंबी होती है, जबकि अलसी एवं सरसों की मूसला जड़े चार से पांच इंच तक लंबी होने के कारण पौधों को निरंतर नमी मिलती रहती है और उत्पादन अधिक होता है। घर पर संरक्षित व सुरक्षित देशी बीजों का प्रयोग करते हैं। एक एकड़ खेत में मिश्रित बुवाई करने के लिए कठिया गेहूँ 20 किग्रा., देशी चना 20 किग्रा. अलसी 6 किग्रा. व सरसों 2 किग्रा. को मिलाकर बुवाई करते हैं। वैकसीन अचानक से कोई जादू नहीं कर देगा मास्क पहनना भी जरूरी होगा.....

हेमन्त आचार्य

जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई माही, वाग्धारा



सीताफल (इन्दुरा)

सीताफल को स्थानीय बोली में शरीफा एवं अन्दुरा भी बोलते हैं। इसका स्वाद अन्य फलों से अलग होता है। आपने सीताफल (शरीफा) खया है, तो इसके स्वाद के बारे में जरूर जानते होंगे। ऊपर से देखने पर सीताफल भले ही थोड़ा खुरदुरा-सा लगता है, लेकिन अंदर का भाग सफेद रंग का, और मुलायम होता है। यह बहुत ही मीठा, और स्वादिष्ट फल होता है। अपने रंग-रूप, और स्वाद के कारण सीताफल (शरीफा) सभी फलों से थोड़ा विशेष बन जाता है। सीताफल के पौधे को बड़ा करना बहुत ही आसान है, यह कम पानी और कम सूर्य में पैदा हो जाने वाला पौधा है। सीताफल के पौधे को गाय भैंस बकरी भी नहीं खाती है। इसकी कई नई किस्में उपलब्ध होने लगी है जिससे अधिक उत्पादन लिया जा सकता है। सीताफल औषधीय गुणों का भण्डार है। सीताफल में मैग्नेशियम और पोटेशियम की भरपूर मात्रा गठिया और हृदय रोगों से तो विटामिन B6 हार्टडिजोज से बचाता है। विटामिन C और A आँख सम्बन्धी रोगों से बचाते हैं। वही पाचन तंत्र को मजबूत करते हैं। जिन्हें उल्टियाँ आने की शिकायत है इसका सेवन उनके लिये बड़ा लाभकारी होता है। सीताफल के सेवन से गर्भवती महिला को प्रसव पीड़ा नहीं होती और शिशु के लिये पर्याप्त दूध उपलब्ध होता है। सीताफल के फलों के अतिरिक्त बीजों के भी अनेक फायदे हैं। कैंसर और डायबिटीज रोगों के लिए बिलासपुर विश्वविद्यालय में मध्यप्रदेश के माण्डव, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र के कुछ क्षेत्रों के सीताफल और पौधों का काफी समय से शोध चल रहा है, शोध के दौरान ही सीताफल के बीज के चमत्कारिक गुणों का पता चला है। दरअसल सीताफल एक ऐसा आहार है, जो शरीर को स्वस्थ बनाते



के साथ-साथ कई बीमारियों के उपचार के लिए भी प्रयोग में लाया जाता

है। आयुर्वेद के अनुसार, सीताफल का प्रयोग एक-दो नहीं बल्कि, अनेक रोगों के इलाज के लिए किया जा सकता है। यह महत्वपूर्ण जानकारी आपके लिए बहुत काम की चीज है। सीताफल का इस्तेमाल कफ दोष को ठीक करने के लिए, खून की मात्रा को बढ़ाने के लिए, उल्टी, दाँतों के दर्द से आराम पाने के लिए किया जाता है। इसके साथ ही इसका प्रयोग अन्य रोगों में भी होता है।

सीताफल के फायदे
दस्त में सीताफल का उपयोग लाभदायक :- दस्त पर रोक लगाने के लिए सीताफल का प्रयोग कर सकते हैं। इसके लिए शरीफा के वृक्ष के तने का काड़ा बना लें। इसे 15-30 मिली मात्रा में पिएं। इससे दस्त पर रोक लगती है। सीताफल के प्रयोग से प्रसूता स्त्री को लाभ :- माँ बनने के तुरंत बाद महिलाओं को कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में माताओं को शरीफा का सेवन करना चाहिए। यह फायदा पहुंचाता है। महिलाएं 1-2 ग्राम शरीफा की जड़ के चूर्ण का सेवन करें। इससे प्रसूता संबंधित विकार में लाभ होता है।

रोम छिद्र की बीमारी में शरीफा के उपयोग से फायदा :- आपकी त्वचा को स्वस्थ रखने में रोम छिद्र की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब रोम छिद्र किसी विकार से ग्रस्त हो जाते हैं, तो त्वचा को इसका नुकसान झेलना पड़ता है। रोम छिद्र विकार को ठीक करने के लिए सीताफल के पत्ते का पेस्ट बना लें, और लेप लगाएं। इससे त्वचा के घाव, त्वचा पर होने वाली सूजन, और रोम छिद्र की बीमारी में लाभ होता है।

जुएं की परेशानी में सीताफल के इस्तेमाल से फायदा :- जुं के अंडे को लीख भी कहते हैं। पुरुष हों, या महिलाएं, सभी को जुं के कारण दैनिक काम-काज में परेशानी का सामना करना पड़ता है। लीख के कारण लोगों को अपने बालों को खुजाना पड़ता है। इस कारण कई बार मजकूर का पात्र भी बनना पड़ जाता है। अगर आप भी जुं से परेशान हैं, तो सीताफल का उपयोग कर सकते हैं। सीताफल के बीजों को पीसकर सिर पर लगाएं। इससे जुं (लीख) मर जाते हैं। इसका प्रयोग करते समय बहुत ही सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि अगर यह आंखों में लग जाए तो आंख खराब हो सकती हैं।

सीताफल के बीजों का काड़ा बना लें, और इसे सिर पर लगाएं। इससे भी जुं (लीख) की परेशानी खत्म होती है।

बुखार में शरीफा का इस्तेमाल :- ठंड लगकर बुखार आता हो, तो सीताफलके तीन पत्तों को नमक के साथ पीसकर पेस्ट बना लें। इसका सेवन करें। इससे सर्दी वाला बुखार ठीक होता है।

सीताफल के सेवन से होती है कफ की बीमारी का इलाज :- कफ होना एक बहुत ही साधारण समस्या है। सीताफल के उपयोग से कफ में फायदा लिया जा सकता है। सर्दी-जुकाम, या कफ से परेशान लोग सीताफल के तने को चबाएं। इससे सर्दी-जुकाम, और कफ में आराम मिलता है।

गुदाभ्रंश (गुदा से कांच निकलना) में सीताफल का प्रयोग लाभदायक

:- गुदाभ्रंश गुदा के फैल जाने की स्थिति को कहते हैं। जब कोई व्यक्ति कब्ज, या मल के सूख जाने की परेशानी से पीड़ित होता है, तो मल त्यागने के समय उसे जोर लगाना पड़ता है। इससे मल के साथ-साथ गुदा के अंदर वाला मुलायम वाला हिस्सा भी बाहर निकल आता है। इसे ही गुदाभ्रंश कहते हैं।

इस रोग को गुदा का चिर जाना, या गुदा से कांच निकलना भी कहा जाता है। हालांकि यह बीमारी किसी को भी हो सकती है, लेकिन बच्चों में अधिक देखी जाती है। इस रोग के कारण गुदा द्वार पर सूजन भी हो जाती है। इसमें सीताफल के इस्तेमाल से बहुत फायदा मिल सकता है। ऐसी बीमारी में सीताफल के पत्तों का काड़ा बनाकर गुदा पर लगाएं। इससे लाभ होगा। मधुमेह या डायबिटीज में फायदेमंद सीताफल का सेवन :- दुनिया भर में लाखों लोग डायबिटीज से पीड़ित हैं। इस बीमारी के कारण लोगों को कई गंभीर बीमारियां होने का खतरा रहता है। डायबिटीज वाले लोग सीताफल से फायदा ले सकते हैं। इसके लिए सीताफल के पत्तों का 1-3 ग्राम चूर्ण बनाकर सेवन करें। इससे मधुमेह में लाभ होता है।

सीताफल के सेवन से हिस्टीरिया में फायदा :- हिस्टीरिया के कारण रोगी को सामान्य जीवन जीने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। शरीफा से हिस्टीरिया में फायदा मिलता है। सीताफल के पत्ते को रस का नाक से लेने से हिस्टीरिया में लाभ होता है। गांठ की परेशानी में सीताफल का उपयोग :- सीताफल का फायदा गांठ की बीमारी में भी होता है। गांठ होने पर लोग पके हुए सीताफल को कूटकर, नमक मिला लें। इससे लेप करने से लाभ होता है।

सीताफल के उपयोगी भाग:- सीताफलका उपयोग इस तरह किया जा सकता है।

- सीताफल के पत्ते
- सीताफल की छाल
- सीताफल की जड़
- सीताफल के बीज

सीताफल का इस्तेमाल कैसे करें?

आप सीताफल का सेवन निम्न मात्रा में कर सकते हैं-

1. सीताफल का चूर्ण - 1-3 ग्राम
2. सीताफल का काड़ा- 5-30 मिली

यदि आप सीताफल का प्रयोग कर बहुत अच्छा परिणाम पाना चाहते हैं, तो इसके इस्तेमाल से पहले चिकित्सक की सलाह लेना ना भूलें।



सफलता की कहानी

बबली देवी पारगी

गांव - कजलिया, जिला बाँसवाड़ा (राज.)

अपनी पोषण बगिया, अपना स्वास्थ्य

यह कहानी है बबली देवी की जो की बाँसवाड़ा जिले के कजलिया की रहने वाली है, बबली देवी कई महिलाओं के लिए एक प्रेरणा है। उन्हें अगर सही मार्गदर्शन मिले, तो वे स्वयं एवं अपने परिवार के स्वास्थ्य के लिए कारगर भूमिका निभाती है, अपनी सकारात्मक सोच और जैविक खेती को अपनाकर व कृषि के प्रति अपनी मेहनत करे तो, देश के कई छोटे किसान कर्ज और गरीबी से मुक्त हो सकते हैं, ऐसा ही उदाहरण और प्रेरणा का स्रोत बनी है बबली देवी।



बबली देवी जनजातीय स्वराज संगठन की सचिव व सक्षम समूह की सदस्य है, बबली देवी ने 10वीं तक अपनी स्कूल की शिक्षा को पूरी की उनके परिवार में बबली देवी के पति और एक बेटा और एक बेटा है, बबली देवी अपने पति के साथ 5 बीघा जमीन पर जैविक खेती कर रही है, जिसमें अपने 70 वर्ष से भी अधिक पहले के परम्परागत बीजों का संरक्षण कर और वाग्धारा द्वारा मिले बीजों से मक्का, झालर, तुअर, धान, कुरी, माल, उडद, गेहूँ, चवला, चना, काली कमांद, जीरा चावल की फसल के साथ मिश्रित खेती को महत्व दिया, जिससे खरीब की फसल में बबली देवी को जैविक खेती से 40 किलो की झालर व 50 किलो माल का उत्पादन होगा जो की पोषण के लिए बहुत कारगर है।

इसी के साथ बबली देवी अपने पति के सहयोग से 7 बीघा जमीन को गिरवी लेकर खेती करती है जिससे सालाना अनाज व चारा का उत्पादन कर 50 हजार से ज्यादा मुनाफा प्राप्त कर अपनी आय में बढ़ोतरी की है, पशुपालन में बबली देवी के पास 7 बकरे, 11 बकरी, 3 गाय व 2 बैल है बबली देवी अपने पति के सहयोग से पशुपालन से साल के 35 हजार की आय कमाती है बबली देवी ने वाग्धारा संस्थान द्वारा बनाये गये सक्षम समूह से जुड़ कर पोषण बगिया को बनाया बहु मंजिला जिससे कोरोना काल में स्थानीय परिवारों को हरी साग सब्जियाँ बेचकर कर 10 हजार से ज्यादा आय पोषण बगिया से कमाई, बबली देवी ने अपने पति के सहयोग से पोषण बगिया को बहुमंजिला बनाया, जिसमें पोषण बगिया के चारों तरफ खम्बे लगाकर ऊपर धागे (रस्सी) की चादर बनाई और पोषण बगिया में विभिन्न प्रकार की परम्परागत साग सब्जी और फलदार पौधे लगाये, जिसमें, टमाटर, मिर्च, भिन्डी, बैंगन, तुई, कद्दू, ठीमड़ा, रजन, हल्दी, अदरक, कठहल, सहजन व बेल वाली सब्जी जिसमें करेला, तुई, लोकी, किकोड़े, टीन्डोरी, जो की अधिक बड़ी होने पर पोषण बगिया में पूरी चादर पर बिछी रहती है भरपूर मात्रा में बेल पर सब्जी लगती है, बबली देवी ने अपनी पोषण बगिया में परिवार के पोषण और स्वास्थ्य के लिए पपीता, अमरुद, आम, निम्बू, सीताफल फलदार पौधे लगा रखे। बबली देवी ने अपनी सोच का दायरा बढ़ाया और पोषण बगिया में चादर का निर्माण किया। जिससे चादर पर छाई बेलदार पत्तियों से भूमि



समूह व सक्षम समूह में परंपरागत बीज, सब्जी वाड़ी, फलदार पौधे लगाने, देशी दवाओं में जैविक खाद के उपयोग और पशुपालन करने के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। और अपने ज्ञान को बढ़ाया सहजकर्ता से प्राप्त जानकारी से बबली देवी ने जैविक खेती व पोषण बगिया लगाई सक्षम समूह की सदस्य बन कर नियमित बैठकों में जाने लगे। इन बैठकों में उन्होंने देशी बीज, कम्पोस्ट खाद, दशपर्णी, जीवामृत, दवाओं के उपयोग के बारे में जाना, और इसी से प्रेरणा लेकर जैविक खेती करने लगे साथ ही खेत में पोषण बगिया और फलदार पौधे लगाना शुरू कर दिया। रासायनिक दवाओं का प्रयोग भी पूरी तरह बंद किया, जिससे अभी उनके घर के लिए पर्याप्त मात्रा में अनाज, दालें, फल व हरी सब्जी की उपलब्धता होती है, और बाजार में बीज, हरी सब्जियाँ, कीटनाशक दवाई और खाद से पैसे की बचत हो रही है। जिससे बबली देवी की आजीविका के सुधार पर सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है, घर के बीज के उपयोग करने से साहूकार को भी पैसे नहीं देने पड़ रहे हैं। पर्याप्त अनाज उत्पन्न हो जाता है उसमें से घर में खाने के लिए और बीज



के लिए अलग रख देने के बाद बची हुई उपज को बाजार में बेचने से अब उन्हें आमदनी भी होने लगी है।
वर्तमान में बबली देवी सब्जी वाड़ी की देख रेख करते हुए सब्जी बेच कर हर महीने के 3000 रुपये कमा लेती है। एवं सभी खर्चे निकालने के बाद खेती और पशुपालन से वर्ष भर में परिवार 90 हजार तक की आय होती है, परिवार को पोषिक भोजन मिलने से आज बबली देवी का परिवार स्वस्थ है, बबली देवी की जैविक खेती व पोषण बगिया के प्रति लगन और मेहनत से परिवार में आमदनी बढ़ने लगी। और उनके परिवार को पोषिक भोजन मिलने लगा जिससे बबली देवी के परिवार की आर्थिक स्थिति धीरे धीरे मजबूत हो गई। बबली देवी की कहानी, कई किसान व महिलाओं के लिए एक प्रेरणा का केंद्र है।

वाग्धारा सहजकर्ता
मानसिंह निनामा



वागड़ रेडियो 90.8 FM
वाग्धारा, कुपड़ा



अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-
वागड़ रेडियो 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी - radlo@vaagdhara.org

यह
“वार्ता वाग्धारा नी”
केवल
आंतरिक
प्रसारण है।

